International Journal of Applied Research 2023; 9(1): 425-426

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 425-426
www.allresearchjournal.com
Received: 09-12-2022
Accepted: 18-01-2023

खुशबू कुमारी
शोधार्थी (नेट–हिन्दी), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा बिहार, भारत

Corresponding Author:
खुशबू कुमारी
शोधार्थी (नेट–हिन्दी), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा बिहार, भारत

विश्व का तोरण–द्वार है–हिन्दी

खुशबू कुमारी

सारांश

स्वागत हर आगत का करता, बनकर प्रेम–बहार।
सिद्ध हो चुकी हिन्दी भाषा, वैश्विक तोरण–द्वार।।
वैश्विक तोरण–द्वार, हिन्दी है वैज्ञानिक भाषा।
कर रही है पूरा, हिन्दी दुनिया की हर आशा।।
कह खुशबू ख्वाहिशा, जग है हिन्दी–पथ अभ्यागत।
करती है इसलिए, हिन्दी दुनिया भर का स्वागत।।[1]

मुख्य से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है–भाषा, जिसके द्वारा मन की बात बताई जाती है।[2] हिन्दी भी भाषा है। हिन्दी भाषा विज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय शाखा की एक ऐसी भाषा है, जिसकी ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखण्डी, मागधी और मैथिली–भोजपुरी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत, पालि और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं हिन्दी आदि का विकास हुआ है।
संस्कृताधारित हिन्दी के तमाम वर्गों की उत्पत्ति माहेश्वर–सूत्र[3] से सिद्ध है, जिसके कारण हिन्दी के अक्षर मंत्रों की हैसियत रखते हैं। इसी भाषा से मर्यादित भारतवर्ष स्वर्ण–खग की संज्ञा से भी विश्व में विख्यात रहा, जिसे देखने, सीखने और लूटने की ललक से भी विदेशियों का आगमन भातवर्ष में होता रहा और हिन्दी वैश्विक तोरण–द्वार बनकर प्रत्येक आगत का स्वागत हृदय खोलकर करती रही, जिसके कारण विद्वानों ने हिन्दी को तोरण–द्वार भी कहना शुरू कर दिया।

कूटशब्द : तोरण–द्वार, बुंदेलखण्डी, भाषा विज्ञान, माहेश्वर–सूत्र, भारतवर्ष

प्रस्तावना

तोरण–द्वार का सीधा अर्थ स्वागत–द्वार है। अर्थात् भारत–प्रवेश का द्वार। यह द्वार भारत में इंडिया गेट के नाम से भी मशहूर है। तकरीबन सड़क और परविारिक भवन–मार्ग पर भी इसका निर्माण देखा जा सकता है। कहीं तोरण–द्वार शहीदों के नाम पर है, तो कहीं युगीन नेताओं अथवा संत–दार्शनिकों के नाम पर। स्पष्ट है कि तोरण–द्वार प्रत्येक देश में अवस्थित है।
इस तोरण–द्वार से संबंधित दृष्टांत भी भारतीय सभ्यता–संस्कृति के आधार पर उपलब्ध है। कथा के अन्तराल में कहा जाता है कि भारतीय परिवेश में ही तोड़न नामक एक राक्षस था, जो पाणिग्रहण संस्कार होने वाले घर के द्वार पर एक तोते का रूप धारण कर चुपचाप बैठ जाता था। बारात के संग विवाहार्थ जो भी दूल्हा आता था, वह उसी की काया में प्रवेश कर जाता था और दुल्हन के साथ संभोग ही नहीं करता था, अपितु उसे सताता भी था। इस रहस्य से जब परदा उठा तक सभी व्याकुल हो गए।
एक बार एक चतुर दूल्हा आया। उसने दुष्ट दैत्य तोते को देख लिया और जबतक वह तोता कुछ समझे, तबतक देखते ही उसने वाण चला दिया। वाण लगते ही तोता गिरकर मर गया, जिससे उस दुल्हन को राक्षसी व्याभिचार नहीं सहना पड़ा।
कहा जाता है कि उक्त प्रथा के कारण ही भारत के क्षेत्र विशेष में आज भी वैवाहिक अवसर पर स्वागत–द्वार पर नकली तोते को बैठाकर उसे मार गिराने का विधान निभाया जाता है।
ऐसे ही तोते को मारने और उसके अंधा होने की बात पारंपरिक छठ गीत में भी सुनाई पड़ती है।

यथा– ''मारबौ रे सुगबा धनुस सँ सूगा गिरे मुरझाए।
आन्हर होइहें रे सुगबा, इ भार छठी माय कँ जाए।।''[4]

कहा जाता है कि इसी दुष्ट राक्षस का नाम छिपा है–तोरण–द्वार शब्द में। क्या हिन्दी रूपी जो वैश्विक तोरण–द्वार है, उसपर भी कोई बहुरूपिया तोता बैठा हुआ है? क्या यही तोता प्रत्येक विदेशी की देह में घुस जाता है? जिसके कारण अधिकांश विदेशी आगत हिन्दी से बढ़िया व्यवहार नहीं कर पाते हैं?

हिन्दी तोरण–द्वार पर आनेवाले शक हो या कोल–किरात अथवा हूण, अँग्रेज हो या फ्रांसीसी अथवा बुलगेरियन, तकरीबन सभी ने हिन्दी का उतना हित नहीं किया, जितना करने की आवश्यकता थी। इन विदेशियों में से कई तो इसी देश के निवासी हो गए और कई हिन्दी पर ही काम कर अपने देश का विद्वान बन गया।

तोरण–द्वार को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

1. वैवाहिक/मांगलिक तोरण–द्वार,
2. सांस्कृतिक स्वागतार्थ तोरण–द्वार और
3. साहित्यिक (सारस्वत) तोरण–द्वार।

यहाँ साहित्यिक तोरण–द्वार ही निर्धारित है।

हिन्दी तोरण–द्वार : विदेशी भाषा साहित्यकारों का प्रवेश–द्वार

खड़ीबोली हिन्दी और हिन्दुस्तानी शब्द निर्माण में विदेशियों की भूमिका ही मुख्यरूप से सिद्ध होती है। हिन्दी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द 'सिंधु' से माना जाता है। सिंधु सिन्ध नदी की संज्ञा है। यह सिन्धु शब्द ईरान में जाकर और हिन्दू, हिन्दी और हिन्द हो गया।[5] ईरानी धीरे–धीरे भारत के अधिक मार्गों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया। हिन्द शब्द पूरे देश का वाचक हो गया।

इसी प्रकार हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानी शब्द 'तुजके बाबरी' की देन है। चूँकि हिन्दी शब्द भी विदेशियों की ही देन है, इसलिए भी विदेशी भाषा साहित्यकारों का स्वागत हिन्दी–तोरण–द्वार द्वारा किया जा रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य में सबसे पहला नाम फ्रांसीसी भाषा विद्वान गार्सा द तासी का रेखांकित है, जिन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का पहला प्रयास किया और फ्रेंच भाषा में 'इस्त्वार द ला लिटरेत्युर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' लिखा।[6]

तॉसी के उपरांत अँग्रेजी भाषा के विद्वान जॉर्ज ए. गियर्सन की संज्ञा रेखांकित है, जिन्होंने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने के प्रयास में 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का लेखन किया, जिसमें इन्होंने प्रथम बार हिन्दी साहित्येतिहास के काल–विभाजन का प्रयास किया।[7]

हिन्दी तोरण–द्वार ने उपरोक्त दोनों विदेशी विद्वानों के अलावा सर्वा गर्मजोशी से स्वागत किया–बुल्गारिया के ईसाई धर्मावलंबी–विशप कामिल बुल्ले का, जो हिन्दी के अनन्य सेवक के रूप में रेखांकित हैं, इन्हें तुलसीदास के 'रामचरितमानस' से असीम प्रेरणा की प्राप्ति हुई। उनके चमत्कारी काव्य–कौशल से प्रभावित होकर उन्होंने लिख दिया–

सबै नचावत राम गोसाईं।
मोहे नचावत तुलसी गोसाईं।।[8]

फादर कामिले बुल्के आये तो थें–ईसाई धर्म का प्रचारक बनकर, लेकिन वे साम्प्रदायिकता से कोसों दूर रहे और हिन्दी साहित्य के बनकर नूर रहे।

हिन्दी तोरण–द्वार मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना, ट्रिनिडाड एवं टोबैगो आदि देशों के साहित्यकारों का भी स्वागत कर रहा है, जहाँ प्रवासी भारतीयों के कारण हिन्दी समझी, बोली और लिखी भी जा रही है। यही कारण है कि कोई हिन्दी को वैश्विक स्तर पर तृतीय स्थान पर देख रहे हैं तो कोई प्रथम स्थान पर। कुछ विद्वान इसे दूसरे स्थान पर भी देख रहे हैं। विश्व के अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, हंगरी, इटली, पोलेंड, रूस, चीन, कनाडा एवं श्रीलंका सहित साठ से अधिक देशों और एक सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में इसका पठन–पाठन भी जारी है।

हिन्दी तोरण–द्वार : सर्व भारतीय भाषा साहित्यकारों का प्रवेश–द्वार

हिन्दी सभी भारतीय आर्यभाषाओं का स्वागत करती है। यही कारण है कि भू–दान–यज्ञ के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे ने सभी भारतीय आर्यभाषाओं को एक मात्र देवनागरी लिपि में ही लिखने की प्रेरणा भी दी। उन्होंने 'नागरी लिपि : भारत को जोड़ने की कड़ी' शीर्षक आलेख में लिखा है–''पहले भारत में एक ही लिपि चलती थी–ब्राह्मी लिपि। बाद में नागरी लिपि आयी। उसके बाद जब अलग–अलग भाषाएँ बनीं, तो अलग–अलग लिपियाँ आईं।..... आज विभिन्न भाषाओं के लोग अपनी–अपनी लिपि में लिखते हैं, साथ ही देवनागरी में भी लिखें, तो कितना लाभ होगा?''

आचार्य भावे वस्तुतः राष्ट्रीय एकता के ख्याल से ही एक लिपि नागरी अपनाने पर बल देते रहे। दूसरी ओर हम यह भी देख रहे हैं कि आधुनिक हिन्दी का भारतेन्दु युग अनुवाद का युग भी सिद्ध हो चुका है, जिसमें सर्वप्रथम बाँग्ला–साहित्य का ही हिन्दी अनुवाद किया गया और हिन्दी गद्य–साहित्य का विकास हुआ।

स्पष्ट है कि हिन्दी तोरण–द्वार ने वैश्विक भाषा साहित्यकारों की तरह ही सर्व भारतीय आर्य भाषा के साहित्यकारों का स्वागत किया। विश्व का तोरण–द्वार हिन्दी ने स्वदेशी–विदेशी तमाम सुधी साहित्यकारों का अभिनंदन किया है और आज भी कर रहा है।

समस्तिका

अस्तु, हम कह सकते हैं कि वैश्विक तोरण–द्वार के रूप में मर्यादित हिन्दी वैश्विक व्योम का ध्रुवतारा बन चुका है। आज नहीं तो कल भारत की राज्यभाषा से ऊपर उठकर भारत की राष्ट्रभाषा भी बन सकता है और राष्ट्रीय–एकता की जंजीर बन सकती है–हिन्दी–लिपि देवनागरी। इसके लिए हिन्दी दृढ़ संकल्पित दीखती है।

हिन्दी घर से बाहर तक भी दीख रही खुशहाल।
विश्वभाषा–रूप को पाकर, करेगी विश्व–लाल।।

संदर्भ

1. स्वरचित
2. 'हिन्दी भाषा पहचान से प्रतिष्ठा तक', हनुमान प्रसाद शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1994, पृ0सं0–08।
3. 'माहेश्वर सूत्र'–'कल्याण' गीता प्रेस गोरखपुर, सम्पादक–हनुमान प्रसाद पोद्दार–1965, पृ0सं0–15।
4. छठ व्रत महापर्व का पारंपरिक गीत–गायिका शारदा सिन्हा।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र/डॉ. हरदयाल–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली–2011, पृ0सं0–09।
6. वही..... पृ0सं0–26।
7. वही..... पृ0सं0–26।
8. 'आजकल'–सितम्बर 2013–सम्पादक–कैलाश दहिया–दिल्ली, पृ0सं0–12।